साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

दैनिक समाचार बुलेटिन — सोमवार, 15 फ़रवरी 2016

आज के कार्यक्रम

15 फ़रवरी 2016 (सोमवार)

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन
मनोज दास
प्रख्यात उड़िया लेखक द्वारा
पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

आदिवासी भाषा काव्योत्सव
अपराह्न 2.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

सांस्कृतिक कार्यक्रम
आदिवासी लोक नृत्य 'कर्मा' की प्रस्तुति
सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

अकादेमी प्रदर्शनी 2015

साहित्योत्सव 2016 का शुभारंभ आज पूर्वाह्न 10.00 बजे प्रख्यात लेखक मनोज दास द्वारा अकादेमी प्रदर्शनी के उद्घाटन से होगा। इस प्रदर्शनी में पिछले वर्ष साहित्य अकादेमी द्वारा देशभर में आयोजित किए गए कार्यक्रमों को चित्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसमें जहाँ पिछले वर्ष के साहित्योत्सव की झलकियाँ हैं वहीं अकादेमी द्वारा आयोजित भीष्म साहनी जन्म शतवार्षिकी कार्यक्रम के अतिरिक्त अकादेमी के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों सहित दिल्ली में आयोजित नियमित कार्यक्रमों; जैसे कथा-संधि, कवि-संधि, मुलाक़ात, अस्मिता, प्रवासी मंच, मेरे झरोखे से, पुस्तक विमोचन, साहित्य-मंच के अतिरिक्त युवा पुरस्कार 2015, बाल-साहित्य पुरस्कार 2015, अनुवाद पुरस्कार 2015 को भी चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

प्रेस वार्ता

नई दिल्ली 12 फ़रवरी 2016 : प्रेस को साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले साहित्योत्सव के बारे में विस्तृत जानकारी देने के लिए एक प्रेस वार्ता का आयोजन 12 फ़रवरी को सायं 3.00 बजे किया गया। इसे संबोधित करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने बताया कि इस वर्ष के साहित्योत्सव में पूरे देश से 180 लेखक और विद्वान भाग ले रहे हैं। इस वर्ष का उत्सव आदिवासी, वाचिक एवं उत्तर-पूर्वी साहित्य पर केंद्रित है। भारत के उत्तर-पूर्वी भागों में आदिवासी एवं वाचिक साहित्य के लिए साहित्य अकादेमी के केंद्र पहले से ही मौजूद हैं। हाल ही में, भारत भर में आदिवासी एवं वाचिक परंपराओं को संरक्षित तथा प्रोत्साहित करने के हमारे प्रयास के अंतर्गत हमने दिल्ली में एक अन्य केंद्र शुरू किया है। इसी दिशा में निरंतर आगे बढ़ते हुए इस बार के उत्सव में हमने 'आदिवासी भाषा काव्योत्सव' को शामिल किया है तथा भारत की अलिखित भाषाओं पर एकदिवसीय परिसंवाद भी आयोजित कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि उत्सव का आरंभ विख्यात ओड़िया लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. मनोज दास द्वारा 15 फ़रवरी 2016 को पूर्वाह्न 10.00 बजे अकादेमी प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ होगा। आदिवासी भाषा का काव्योत्सव का उद्घाटन प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् प्रो. मृणाल मिरी द्वारा किया जाएगा। साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह का आयोजन फ़िक्की स्वर्ण जयंती सभागार में 16 फरवरी 2016 को सायं 5.30 बजे किया जाएगा।

17 फ़रवरी 2016 को 'लेखक सम्मिलन' आयोजित किया जाएगा। इस वर्ष का संवत्सर व्याख्यान प्रख्यात न्यायविद् एवं विशिष्ट गाँधी विचारक डॉ. चंद्रशेखर धर्माधिकारी द्वारा उसी दिन शाम को दिया जाएगा ।

18-20 फ़रवरी 2016 के दौरान 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' विषय पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी अकादेमी सभागार में आयोजित की जाएगी। इस संगोष्ठी का उद्घाटन विख्यात विदुषी डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा किया जाएगा, जबकि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् प्रो. कृष्ण कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित होंगे।

19 फ़रवरी 2016 को भारत की अलिखित भाषाओं पर एकदिवसीय परिसंवाद तथा 20 फ़रवरी 2016 को 'अनुवाद चेतना और भारतीय साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की जाएगी।

बच्चों की साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए अकादेमी ने 'आओ कहानी बुनें' शीर्षक से एक पूरे दिन का कार्यक्रम रखा है, जिसमें उनके लिए कई कार्यशालाओं और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इस वर्ष उत्सव में प्रतिदिन शाम को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। जिनमें प्रमुख हैं -- ओड़िशा का 'कर्मा नत्य', मणिपुर की 'रासलीला और पुंग चोलम', निज़ामी बंधुओं द्वारा 'क़व्वाली', 'कथकली' तथा 'चेराव' (बाँस नृत्य) की प्रस्तुति प्रमुख हैं।

साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 से सम्मानित लेखक

कुल सैकिया (जन्म : 1959) सिद्ध असमिया कथाकार हैं। आपकी कहानियों के विषय विशिष्ट हैं, जो वर्तमान समाज के मानवीय भावों, संबंधों, आशाओं एवं आकांक्षाओं से सरोकार रखते हैं।

पुरस्कृत कहानी-संग्रह *आकाशर छबि आरु अन्यान्य गल्प* के प्रत्येक कहानी की विषयवस्तु अनूठी है। कहानियों की भाषा पात्रों की मानसिकता और परिस्थितियों के अनुकूल है।

आलोक सरकार (जन्म : 1933) बाङ्ला के एक विशिष्ट कवि, कथाकार और नाटककार हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आत्मकथा आदि विधाओं में आपकी पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। 'अनुपस्थित' और 'शून्य' आपकी विचार-प्रक्रिया और काव्य-रचना के अनिवार्य तत्त्व के रूप में नज़र आते हैं।

पुरस्कृत कविता-संग्रह *शोनो जवाफुल* में कवि ने अपनी पूर्ववर्ती काव्यधारा से भिन्न मिज़ाज की कविताएँ रची हैं। कवि की स्वानुभूतियों से प्रेरित ये कविताएँ सरल, सहज भाषा में गहन आंतरिक आनंद की कविताएँ हैं।

ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म (जन्म : 1943) प्रख्यात बोडो कवि, आलोचक तथा निबंधकार हैं। आप बोडो में 'प्रति-कविता' के पुरोधा हैं।

पुरस्कृत बोडो कविता-संग्रह *बायदि देंखो बायदि गाब* विभिन्न विषयवस्तुओं पर आधारित हैं, जिनमें वनों की कटाई के कारण उत्पन्न पारिस्थितिकी असंतुलन, इस संसार में मनुष्य के मनुष्य बने रहने की प्रार्थना, प्रजातंत्र, भूमंडलीकरण, समानता, प्रेम आदि भाव शामिल हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से आपने आशा, आकांक्षा और सरोकारों के संप्रेषण द्वारा बोडो समाज की अमूल्य सेवा की है।

ध्यान सिंह (जन्म : 1939) वरिष्ठ डोगरी लेखक हैं। अपनी सृजन-यात्रा में आपने कविता, नाटक, निबंध तथा अनुवाद आदि विधाओं में एक दर्ज़न से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया है। आपने लोक-कथाकार के रूप में रुत्त-राह्दे की परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए डोगरा संस्कृति को उत्कृष्ट योगदान दिया है।

पुरस्कृत डोगरी कविता-संग्रह *परछामें दी लोठ* की कविताएँ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों के अतिरिक्त मानव मनोविज्ञान तथा जटिल मानसिक पहलुओं की गहरी पड़ताल करती हैं।

साइरस मिस्त्री (जन्म : 1956) एक प्रतिष्ठित भारतीय अंग्रेज़ी कथाकार और नाट्यकार हैं। आपने पत्रकार, वृत्तचित्र और फ़ीचर फ़िल्म लेखक जैसी अपनी अन्य भूमिकाओं में भी सफल संतुलन साधा है।

पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *क्रॉनिकल ऑफ़ ए कॉर्प्स बेअरर* हाशिए पर पड़े पारसी शववाहकों के एक समुदाय खांदियास की सच्ची, बेहद चौंकाने एवं व्यथित कर देनेवाली कहानी से प्रेरित है। उपन्यासकार ने इस उपन्यास को मनोदशा एवं आख्यान पर पूर्ण संतुलन रखकर रचा है। यह एक उत्कृष्ट उपन्यास है, जिसमें पाठकों को भीतर तक हिला देने की क्षमता है।

रसिक शाह (जन्म : 1922) विख्यात गुजराती लेखक तथा निबंधकार हैं। आपका योगदान विमर्श की नैतिक, मानवतावादी भाषा तक पहुँचने के लिए संघर्ष पर ध्यान केंद्रित करता है। आपकी रचनाएँ दो पीढ़ियों के गुजराती कवियों, लेखकों तथा आलोचकों की संवेदनाओं को रूपाकार देती हैं।

पुरस्कृत निबंध-संग्रह *अंते आरंभ* (खंड I और II) दो खंडों में प्रकाशित है, जो मानव बुद्धि के अनुरूप अनुभूतियों की बारीकियों एवं संसार के प्रति उसकी समझ को उद्घाटित करता है।

रामदरश मिश्र (जन्म : 1924) हिंदी के वरिष्ठ कवि, कथाकार, निबंधकार और आलोचक हैं। आपने काव्य और कथा के विभिन्न रूप-शैलियों में तो लिखा ही, आत्मकथा, यात्रावृत्त, डायरी, संस्मरण आदि विधाओं में भी अपनी क़लम चलाई है। आपकी रचनाओं में ज़मीनी यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ-साथ भारतीय संस्कृति की अनुगूँजें हैं।

पुरस्कृत कविता-संग्रह *आग की हँसी* में नया स्पंदन और दृष्टि की सघनता है। ये कविताएँ मानवीय मूल्यों से सरोकार रखती हैं, जिनकी खोज मानवीय जीवन की साधरणता में की गई है। इनमें अभिव्यक्त विचार एवं अनुभव सहज तथा स्पष्ट हैं, जिनसे पाठक अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है।

के.वि. तिरुमलेश (जन्म : 1940) प्रतिष्ठित कन्नड कवि तथा आलोचक हैं। आपकी कविताएँ आपकी विदग्ध दृष्टि तथा जीवन के ताने-बाने की गहरी समझ को प्रतिबिंबित करती हैं।

पुरस्कृत कृति *अक्षय काव्य* के.वि. तिरुमलेश कृत कन्नड कविता-संग्रह है, जो नवीन प्रयोग है। यह वर्तमान समय की कठिन परिस्थितियों को दर्शाता है तथा इसका प्रस्तुतीकरण अत्यंत चित्रात्मक है।

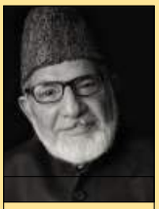

बशीर भद्रवाही (जन्म : 1935) एक सुपरिचित कश्मीरी एवं उर्दू लेखक हैं, जिनकी रचनाएँ संवेदनशीलता से कश्मीरी लोकाचार को अभिव्यक्त करती हैं।

पुरस्कृत कृति *जमिस त कशीरी मंज़ कशीर नातिया अदबुक तवारीख़* बशीर भद्रवाही कृत कश्मीरी आलोचना कृति है, जिसमें कश्मीरी साहित्य की अत्यंत महान एवं प्राचीन शैली 'नात' की विस्तृत विवेचना की गई है।

उदय भेंब्रे (जन्म : 1939) कोंकणी के प्रतिष्ठित लेखक हैं, जिनकी कृतियों ने कोंकणी साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। आपकी रचनाएँ सामाजिक अंतःकरण को जाग्रत करने का कार्य करती हैं तथा स्पष्ट एवं भेदक हैं।

पुरस्कृत नाटक *कर्ण पर्व* महाभारत के एक प्रसंग पर आधारित है। आपने कर्ण-अर्जुन की शत्रुता के प्रसंग तथा कर्ण के वध में कृष्ण की भूमिका की अनूठी व्याख्या की है। यह नाटक अपनी सुंदर भाषा तथा संवादों में सटीक शब्द-प्रयोग के कारण प्रशंसनीय है।

मनमोहन झा (जन्म : 1951) मैथिली भाषा के प्रतिष्ठित लेखक हैं। आपने विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए कहानियाँ, निबंध, संस्मरण, एकांकी नाटक आदि लिखे हैं। आपकी लेखन शैली समृद्ध और मिथिलांचल के जनजीवन का सच्चा एवं जीवंत चित्रण प्रस्तुत करती है।

पुरस्कृत कहानी-संग्रह *खिस्सा* की कहानियाँ वर्तमान मिथिला समाज के जीवन की मूल प्रवृत्ति, स्वभाव एवं मनोवृत्ति को प्रदर्शित करती है तथा मैथिली भाषा के सृजनात्मक लेखन को विश्वव्यापकता प्रदान करती है।

के.आर. मीरा (जन्म : 1970) सुपरिचित मलयाळम् लेखिका और पत्रकार हैं, जिन्होंने मलयाळम् साहित्य के क्षेत्र में नई उद्भावनाओं के साथ प्रभूत योगदान किया है। आपकी रचनाओं में मानवीय मनोविज्ञान तथा मानसिक विकास के क्रम में नैतिक एवं मूल्यगत द्वंद्वों के प्रति आपकी गहरी दृष्टि का परिचय मिलता है।

पुरस्कृत उपन्यास *आराचार* जो एक महिला की अशांत मानसिकता एवं दुःखों का वर्णन करता है। लेखिका ने उपन्यास की नायिका के माध्यम से विभाजन से पूर्व तथा बाद के जटिल भारतीय समाज में हिंसा तथा न्याय से जुड़े मुद्दों को छुआ है।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 से सम्मानित लेखक

क्षेत्रि राजेन (जन्म : 1968) सुपरिचित मणिपुरी कवि हैं। आपकी कविताएँ जीवन और संस्कृति की संवेदनाओं को प्रस्तुत करती हैं तथा उनके सरोकारों, आशाओं एवं आकांक्षाओं को स्वर देती हैं।

पुरस्कृत कविता-संग्रह *अहिंना येकसिल्लिबा* की कविताएँ मुख्यतः वर्तमान सामाजिक जीवन एवं इसे जीने के ढंग से जुड़े असंतोष तथा असंगति से संबंधित हैं। कवि ने आमजन के उत्पीड़ित एवं दमित जीवन तथा स्थिति को व्यक्त करने का पूर्ण प्रयास किया है।

अरुण खोपकर (जन्म : 1945) प्रख्यात फ़िल्म अभिनेता, निर्देशक एवं निर्माता होने के साथ प्रतिष्ठित मराठी लेखक हैं। फ़िल्म विशेषज्ञ के रूप में आपकी एक अंतरराष्ट्रीय पहचान है। आप प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में फ़िल्मांकन कला के लोकप्रिय शिक्षक हैं।

आपका पुरस्कृत निबंध-संग्रह *चलत्-चित्रव्यूह* के अंतर्गत समकालीन भारत के प्रतिष्ठित कलाकारों का जीवनवृत्त तथा समालोचना सम्मिलित है। यह संग्रह कला समीक्षा तथा मराठी में तुलनात्मक अध्ययन को एक बहुमूल्य योगदान है।

गुप्त प्रधान (जन्म : 1945) नेपाली के सुपरिचित कथाकार और आलोचक हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से जहाँ आपने नेपाली जनजीवन के संघर्ष और सरोकारों को वाणी दी है, वहीं अपनी आलोचनात्मक एवं संपादित कृतियों के माध्यम से नेपाली साहित्य के अनुद्घाटित पृष्ठों को उजागर किया है।

पुरस्कृत कहानी-संग्रह *समयका प्रतिविम्बहरू* की कहानियों में कहीं राजनीतिक व्यंग्य है तो कहीं छोटे से भूगोल को केंद्रीयता प्रदान करते हुए साधारण जनजीवन की जटिलताओं, आजीविका से जुड़ी समस्याओं तथा जीवन-अस्मिता के संघर्षों की अभिव्यक्ति है।

विभूति पट्टनायक (जन्म : 1937) बहुसर्जक ओड़िया कथाकार और आलोचक हैं। उपन्यास, कहानी, यात्रावृत्त तथा आलोचना की आपकी 150 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

पुरस्कृत कहानी-संग्रह *महिषासुरर मुँह* की कहानियों में आधुनिक जीवन की संवेदना, गुस्सा, विडंबना और विद्रोह को लेखक ने अपनी विशिष्ट भाषा और मुहावरों में संप्रेषित किया है। आलोचनात्मक टिप्पणियों की परवाह न करते हुए लेखक ने किसी नवीन शैली का सूत्रपात अथवा अनुसरण करने की बजाय पारंपरिक आख्यान शैली का ही निर्वहन किया है।

जसविंदर सिंह (जन्म : 1954) पंजाबी के प्रतिष्ठित कथाकार और आलोचक हैं। आपकी कहानियों में पंजाबी जनजीवन की यथार्थाभिव्यक्ति है तथा आलोचना कृतियों में साहित्य सिद्धांतों के साथ-साथ साहित्य के सांस्कृतिक अध्ययन का प्रयास मिलता है।

पुरस्कृत उपन्यास *मात लोक* उस उथल-पुथल को अभिव्यक्त करता है, जिसे पंजाब ने 80 के दशक के अंत में अनुभव किया था। इसमें घटनाओं का चित्रण कलात्मक तथा यथार्थ के निकट है।

मधु आचार्य 'आशावादी' (जन्म : 1960) प्रतिष्ठित राजस्थानी कथाकार और रंगकर्मी हैं। हिंदी पत्रकारिता से संबद्ध 'आशावादी' की गणना ज़मीन से जुड़े हुए पत्रकारों में होती है।

पुरस्कृत उपन्यास *गवाड़* अपनी विधागत संरचना में एक विलक्षण और चित्ताकर्षक प्रयोग है। उपन्यास के परंपरा-रूढ़ ढाँचे अथवा उसके दोहराव से अछूता है। चरित्रों के 'कोलाज' से एक ऐसा प्रच्छन्न कथासूत्र पिरोया गया है, जो उपन्यास विधा की एक नई प्रस्तावना प्रस्तुत करता है।

रामशंकर अवस्थी (जन्म : 1942) एक बहुप्रतिभ संस्कृत लेखक हैं। आप एक कवि, कथाकार और मनीषी हैं। आपने संस्कृत साहित्य में नई विधाओं और भावों की उद्भावना की है।

पुरस्कृत संस्कृत महाकाव्य *वनदेवी* सीता के जीवन एवं चरित्र से सरोकार रखता है। कवि ने युगों पुराने विषय पर दोबारा ग़ौर करते हुए एक नवीन परिदृश्य के साथ सीता के चरित्र को समसामयिक अर्थ प्रदान किया है। भाषा तथा शब्द-योजना का समुचित निर्वाह करते हुए लेखक ने मुहावरों का सटीक एवं उत्कृष्ट प्रयोग किया है तथा स्त्री विमर्श को नई संवेदना दी है।

रविलाल टुडु (जन्म : 1939) संताली के प्रमुख नाटककारों में से एक हैं। आपने अपने नाटकों के माध्यम से संताल जनजाति और संताली भाषा के संघर्ष और अस्मिता को स्वर दिया है। आपने कुछ बाङ्ला नाटकों के अनुवाद भी किए हैं।

पुरस्कृत नाटक *पारसी खातिर* संताली भाषा की समकालीन धारणा पर आधारित है। लेखक ने विभिन्न चरित्रों के माध्यम से संताली भाषा से संबंधित विभिन्न संकटावस्थाओं को बड़े ही उपयुक्त ढंग से चित्रित किया है। यह नाटक संताली भाषा तथा समाज के उत्थान हेतु पाठकों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से सक्षम है।

माया राही (जन्म : 1939) प्रतिष्ठित सिंधी कथालेखिका हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से सिंधी समुदाय के साथ-साथ अन्य समुदायों की समस्याओं और चुनौतियों को भी उजागर किया है। अत्याधुनिक भावबोधों की वकालत करते हुए भी वे पारंपरिक जीवन मूल्यों का समादर करती हैं।

पुरस्कृत कहानी-संग्रह *महँगी मुरक* में लेखिका ने पुरानी परंपराओं के विरुद्ध नई धारणाओं को ग्रहण करने की वकालत करते हुए सरल, सरस एवं स्पष्ट भाषा में नवीन संवेदनाओं को स्वर दिया है।

आ. माधवन (जन्म : 1934) तमिळ के वरिष्ठ साहित्यकार हैं। आपने अपने लेखन के माध्यम से तमिळ उपन्यास के पारंपरिक शिल्प को खंडित कर उसे एक नई धारा प्रदान की है।

पुरस्कृत निबंध-संग्रह *इलक्किय चुवडुकळ* पिछले 50 वर्षों में लिखे गए साहित्य के विशाल परिसर की पड़ताल करता है। संकलित निबंध तमिळ, मलयाळम्, कन्नड तथा अंग्रेज़ी भाषा के विशिष्ट लेखकों का मूल्यांकन करते हैं।

वोल्गा (जन्म : 1950) प्रतिष्ठित तेलुगु कथा-लेखिका, आलोचक, पटकथाकार और स्त्रीविमर्शकार हैं। भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति, चुनौतियों, संघर्षों और सरोकारों को रचनात्मक, वैचारिक और व्यावहारिक स्तर पर अभिव्यक्ति देनेवालों में आप अग्रणी हैं।

पुरस्कृत कहानी-संग्रह *विमुक्त* वर्तमान काल के पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की व्यथा को प्रतिबिंबित करता है। रामायण की पृष्ठभूमि में सीता का चरित्र सभी कहानियों का केंद्रबिंदु है। वाल्मीकि रामायण के उलट इस संग्रह की कहानियों में सीता और शूर्पणखा को अच्छी सहेलियों के रूप में दर्शाया गया है एवं उन्हें अधिक मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया गया है।

शमीम तारिक़ (जन्म : 1952) प्रतिष्ठित उर्दू आलोचक और पत्रकार हैं। ऐतिहासिक विषयों से लेकर विभिन्न कालखंड के साहित्य और समसामयिक विषयों पर आपका गंभीर वैचारिक लेखन पाठकों की पहली पसंद रहा है।

पुरस्कृत आलोचना कृति *तसव्वुफ़ और भक्ति (तनक़ीदी और तकाबुली मुतालेआ)* हमारे धर्मनिरपेक्ष लोकाचार एवं सामाजिक रचना संबंधी तत्त्वों से सरोकार रखती है तथा दर्शनशास्त्र के सूफ़ीवाद एवं वेदांती धाराओं को प्रतिपादित करती है।

साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

साहित्योत्सव कार्यक्रम

15 फ़रवरी 2016 (सोमवार)

अकादेमी प्रदर्शनी का मनोज दास, प्रख्यात विद्वान द्वारा उद्घाटन
पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

आदिवासी भाषा काव्योत्सव : उद्घाटन मृणाल मिरी द्वारा अपराह्न 2.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

सांस्कृतिक कार्यक्रम : आदिवासी लोक नृत्य 'कर्मा' की प्रस्तुति : सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

16 फ़रवरी 2016 (सोमवार)

मीडिया से संवाद : पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह : सायं 5.30 बजे, फ़िक्की सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 'रासलीला' और 'पुंग चोलम' की प्रस्तुति, सायं 6.30 बजे, फ़िक्की सभागार

17 फ़रवरी 2016 (बुधवार)

लेखक सम्मिलन : पुरस्कृत लेखक अपना अनुभव साझा करेंगे, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

युवा साहिती : युवा लेखक उत्सव, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन

संवत्सर व्याख्यान : चंद्रशेखर धर्माधिकारी, प्रख्यात विधिवेत्ता एवं गाँधी विचारक द्वारा सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

18 फ़रवरी 2016 (बृहस्पतिवार)

आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों की प्रख्यात लेखकों/विद्वानों से बातचीत, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' का उद्घाटन विख्यात विदुषी कपिला वात्स्यायन, विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् कृष्ण कुमार द्वारा द्वारा, पूर्वाह्न 11.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : निज़ामी बंधुओं द्वारा क़व्वाली की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

19 फ़रवरी 2016 (शुक्रवार)

भारत की अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद : पूर्वाह्न 11.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : *ओथेलो* की 'कथकली' शैली में प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

20 फ़रवरी 2016 (शनिवार)

संगोष्ठी : 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ', पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 'चेराव' (बाँस नृत्य) की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग (मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन के पास), नई दिल्ली-110 001
फोन : +91-011-23386626 / 27 / 28
ई-मेल: secretary@sahitya-akademi.gov.in **वेब-साइट** : www.sahitya-akademi.gov.in